दिनांक : - 17-05-2020

कॉलेज का नाम : - गोरधाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम : - डॉ० फारुक आज़मा (अतिथी शिक्षक)

स्नातक : - प्रथम खंड (कला)

विषय : - प्रतिष्ठा इतिहास

एकाई : - प्रथम

पत्र : - प्रथम

अध्याय धर्म —

ईसा पुर्व छठी सदी के उत्तरार्द्ध में मध्य गंगा के मैदानो में अनेक धार्मिक सम्प्रदायो का उदय हुआ इस युग में करीब 62 सम्प्रदायो की जानकारी मिलती है। दरअसल यह काल बौद्धिक चिंतन का युग माना जाता है। इस युग में यूनान में पाइथागोरस ईरान में जरथ्रुष्ट, चीन में कन्फ्यूशियस और लाओत्से

तथा भारत में बुद्ध एवं महावीर सर्वाधिक प्रसिद्ध हुए। परंतु यह निश्चित करना कठिन है कि विश्व के विभिन्न भागों में चल रहे इन धर्म सुधार आन्दोलनों तथा इसके नेताओं के मध्य संपर्क था कि नहीं।

उद्भव के कारण →

इन पंथों के उद्भव के यथार्थ कारण था पूर्वी-उत्तर भारत में नई कृषि मूलक अर्थव्यवस्था का विस्तार। अन्य कारणों में वर्ण व्यवस्था की जटिलता एवं तनावपूर्ण सामाजिक जीवन, प्रचलित धार्मिक व्यवस्था के प्रति असंतोष एवं नई अर्थव्यवस्था का प्रभाव को लिया जा सकता है।

इस काल में परंपरागत लौकिक धर्म अपने गति से चल रहा था और इसमें इन्द्र देवता को प्रधान माना जाता था। उसे शक्र तथा मघवा कहा जाता था।

बौद्ध ग्रंथ में ब्रह्मा (ब्रम्हा) शब्द का भी उल्लेख है। रुद्र शिव के रूप में जाने जाते थे। पाणिनी ने वासुदेव सम्प्रदाय

की चर्चा की है जो भागवत धर्म से जुड़ा था।
महाभारत में भी कृष्ण पूजा का उल्लेख है। उनके भाई बलदेव (लंगुलिन) के नाम का उल्लेख है। जैन ग्रंथ में स्कंद की चर्चा है जो शिव के पुत्र थे।
इस युग में नाग पूजा की भी चर्चा मिलती है। मनसा का सर्पदंश से रक्षा करनेवाली देवी के रूप में चित्रण हुआ है। नागों को कभी तो किसी दिवंगत पूर्वज के आत्मा और कभी गड़े धन का रक्षक माना जाता था।
नाग पूजा का अस्तित्व सभी धर्मों में मिलता है, जैसे - तेइसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ को सर्प पूजा का प्रतीक बताया गया है।
शैव धर्म में शिव तथा गणेश को सर्प पहने हुए दिखाया गया है।
वैष्णव धर्म में शिव तथा गणेश को सर्प भक्षक बताया गया है परंतु विष्णु को शैय्या शेषनाग पर बताई गई है।

Scanned with CamScanner

हरिवंश पुराण में कृष्ण द्वारा कालिया को वश में करने का विवरण मिलता है।
बलराम को शेषनाग का अवतार बताया गया है।
बौद्ध एवं जैन ग्रंथों में यक्ष एवं वृक्ष पूजा का भी प्रमाण मिलता है। यक्षों के राजा को वैसवन कहा जाता था। उदार और परोपकारी यक्ष मणिभद्र था।
वृक्ष पूजा का संबंध बौद्ध धर्म से भी था। बौद्ध कला की पूर्व अवस्था में भरहुत एवं सांची में चित्रित बोधिवृक्ष वस्तुतः बुद्ध की बोधि प्राप्ति का सूचक है।
बौद्ध ग्रंथों के अनुसार इस समय 62 सम्प्रदाय अस्तित्व में थे इनमें से कुछ स्पष्टः भौतिकवादी थे।
छः प्रमुख नास्तिक सम्प्रदाय —
(1) मक्खलि गोशाल - प्रारंभ में यह छः वर्ष तक महावीर के रहा फिर उसने आजीवक सम्प्रदाय की स्थापना की। कुछ पुस्तकों में इस सम्प्रदाय की स्थापना का श्रेय नंद वच्छ

को दिया जाता है तथा अध्यक्ष के रूप में किसी संकिच्च का नाम मिलता है।

इनका धर्म नियतिवाद का था। मक्खलि गोशाल का मत था कि आत्मा को अनेकानेक पुनर्जन्मों के निर्धारित अटल चक्र से गुजरना पड़ता है तथा प्रत्येक जन्म में वह जिस शरीर से संबंधित होता है वह होगा ही चाहे कर्म कैसा भी किया गया हो।

एक धार्मिक सम्प्रदाय के रूप में आजीवकों का उल्लेख पातंजलि ने किया। इसकी चर्चा मिलिन्द-पन्ह में भी है। मौर्य शासक बिंदुसार तथा दशरथ इस धर्म के उत्साही समर्थक थे।

अजीवक सम्प्रदाय के अनुयायी अशोक वृक्ष की पूजा ईश्वर रूप में करते हैं तथा अपने हाथों में मोर पंख का गुच्छा रखते हैं।

② अजित केश कंबलिन :- भारत के सबसे पहले भौतिकवादी चिंतक थे। इनका मानना था कि अच्छे या बुरे कर्मों का कोई परिणाम नहीं होता ! आदमी चाहे जो

करे उसका सार भूत मे विलीन नहीं जाता है।
दान या यश्या का मनुष्य की नियति से कोई संबंध नहीं होता है। उनका मानना था कि प्रत्येक घटना अपने स्वभाव के अनुरूप होती है। अतः जो इच्छा हो वही करो। इस को मत यदृच्छावादी कहा गया है। आगे चलकर इससे लोकायात दर्शन का विकास हुआ। जिसका प्रतिपादक चार्वाक था।

③ पुराण कास्यप :- सुमंगल विलसनी के अनुसार वह एक दास पुत्र था जो अपने स्वामी के घर से भाग गया था।
एक बौद्ध अनुश्रुति के अनुसार उसने बुद्ध के परिनिर्वाण परि के 16 में वर्ष मे श्रावस्ती के निकट जल समाधि ले ली।
उसका मानना था कि न ही जन्म होता है न पुनर्जन्म
पुरण काश्यप के धर्म को अक्रियावादी कहा गया है।
सम्भवतः पूरण कस्यप ने ही सांख्य दर्शन की नींव डाली।
इसके अनुसार आत्मा शरीर से पृथक है। आगे चलकर

पुराण कश्यप के सम्प्रदाय का मक्खलि गोशल के सम्प्रदाय में विलय हो गया।

(4) पकुध कच्चायन (नियतिवादी) वह भी कर्म तथा पुनर्जन्म में आस्था नहीं रखता था। उसके विचार में सात वस्तुएँ पृथ्वी, जल, तेज, वायु, सुःख, दुःख और जीव न तो पैदा किये जा सकते हैं और न नष्ट। अतः संसार में न तो कोई किसी को मारता है और न ही कोई मारा जाता है। अतः यदि कोई दूसरे के धार से पृथ्वी को मांस के लोथड़े में भी तब्दील कर दे तो भी कोई पाप नहीं होगा।

इस दर्शन से परवर्ती वैशेषिक दर्शन का उद्गम माना जा सकता है। इस धर्म के अनुयायी मक्खलि गोशाल के सम्प्रदाय से जुड़े गये।

(5) संजय वेलिट्ठपुत्त (अनिश्चयवादी): इन्होंने नतो किसी मत को स्वीकार किया है।

Scanned with CamScanner